International Journal of Scientific Research in Engineering and Management (IJSREM)
Volume: 09 Issue: 02 | Feb - 2025 SJIF Rating: 8.586 ISSN: 2582-3930

समाजवादी चिंतक के रूप में जवाहरलाल नेहरू

लालू यादव
शोध छात्र
पंजीयन संख्या : 708/2022
स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग
ति. मां. भा. वि. वि. भागलपुर

सारांश:

यह आलेख भारत के पहले प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू को एक समाजवादी चिंतक के रूप में विश्लेषित करता है। नेहरू का समाजवाद भारतीय परिस्थितियों, सांस्कृतिक विविधताओं और लोकतांत्रिक परंपराओं के अनुरूप विकसित एक व्यावहारिक विचारधारा थी। वे न तो कट्टर मार्क्सवादी थे और न ही पश्चिमी समाजवाद के अंध अनुयायी, बल्कि उन्होंने भारतीय समाज की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए एक लोकतांत्रिक समाजवाद की संकल्पना प्रस्तुत की। नेहरू का समाजवादी दृष्टिकोण मुख्यतः आर्थिक समानता, सामाजिक न्याय, वैज्ञानिक चेतना और राज्य की कल्याणकारी भूमिका पर आधारित था। उन्होंने समाजवाद को केवल एक आर्थिक नीति न मानकर एक सामाजिक और नैतिक प्रतिबद्धता के रूप में देखा। उनके अनुसार, जब तक समाज में गरीबी, असमानता और शोषण रहेगा, तब तक वास्तविक लोकतंत्र संभव नहीं। इसीलिए उन्होंने समाजवाद को लोकतांत्रिक प्रणाली के भीतर ही लागू करने की आवश्यकता महसूस की। नेहरू के समाजवादी मॉडल की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता थी—वर्ग संघर्ष के स्थान पर वर्ग समन्वय पर बल। उन्होंने श्रमिक, किसान, व्यापारी और उद्योगपतियों के बीच संघर्ष के बजाय सहयोग और समन्वय को प्राथमिकता दी। उनका मानना था कि सभी वर्गों के सहयोग से ही राष्ट्र का समग्र विकास संभव है। यही कारण था कि उन्होंने मिश्रित अर्थव्यवस्था को अपनाया जिसमें सार्वजनिक और निजी क्षेत्र दोनों की भूमिका सुनिश्चित की गई। नेहरू ने औद्योगीकरण को समाजवाद की रीढ़ माना। उन्होंने भारी उद्योगों, सार्वजनिक उपक्रमों और तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा देकर आत्मनिर्भर भारत की नींव रखी। योजनाबद्ध विकास प्रणाली, पंचवर्षीय योजनाएँ और सार्वजनिक वितरण प्रणाली उनके समाजवादी दृष्टिकोण के व्यावहारिक रूप थे।

हालाँकि उनके मॉडल की कुछ सीमाएँ भी थीं—जैसे सार्वजनिक क्षेत्र की अक्षमता, कृषि क्षेत्र की उपेक्षा, और अत्यधिक केंद्रीकरण। इसके बावजूद, यह अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि नेहरू

का समाजवाद भारत के लिए एक नैतिक, वैचारिक और व्यावहारिक मार्गदर्शन था, जिसने स्वतंत्र भारत की नीतियों और संस्थाओं को दिशा दी।

मूल शब्द (Keywords) : समाजवादन , लोकतांत्रिक समाजवादमिश्रित अर्थव्यवस्था, समन्वय, औद्योगिक विकास, पंचवर्षीय योजना ,राज्य की कल्याणकारी भूमिका, सार्वजनिक क्षेत्र,आर्थिक समानता,सामाजिक न्याय ,विकासशील राष्ट्र ,विचारधारा ,समाज , आधुनिकीकरण

साहित्य समीक्षा :

उपरोक्त ग्रंथों में पंडित जवाहरलाल नेहरू के समाजवादी चिंतन और भारत में समाजवाद के विकास को व्यापक रूप से प्रस्तुत किया गया है। *डिस्कवरी ऑफ इंडिया* में नेहरू ने भारतीय संस्कृति, इतिहास और स्वतंत्रता संग्राम के साथ-साथ समाजवाद को भारत की सामाजिक-आर्थिक समस्याओं के समाधान के रूप में प्रस्तुत किया है। विपिन चंद्र की *आधुनिक भारत का आर्थिक इतिहास* भारत में उपनिवेशवाद की आर्थिक नीतियों और उनके समाजवादी विकल्पों की भूमिका पर गहराई से प्रकाश डालती है। सुब्रत कुमार मित्रा और बद्री नारायण प्रकाश की कृतियाँ भारत में लोकतंत्र और समाजवाद के आपसी संबंधों की पड़ताल करती हैं। वी.पी. दत्ता और गोपाल की जीवनीपरक कृतियाँ नेहरू के समाजवादी विचारों के विकास, उनके प्रयोग और सीमाओं का मूल्यांकन करती हैं। ये रचनाएँ नेहरू के व्यवहार और विचारों के द्वंद्व को भी उजागर करती हैं। प्रदीप कुमार घोष की *इंडियन सोशलिज्म: नेहरू एंड आफ्टर* पुस्तक भारत में नेहरू युग के बाद समाजवाद की स्थिति की आलोचनात्मक समीक्षा प्रस्तुत करती है, जबकि रेड्डी और अप्पन की *इंडियन इकॉनॉमी* में भारत की मिश्रित अर्थव्यवस्था और नियोजन की समाजवादी प्रवृत्तियों का विश्लेषण है। पुरुषोत्तम जोशी की कृति इस मिश्रित मॉडल की विशेषताओं को स्पष्ट करती है।

अंततः, रघुबीर सिंह की पुस्तक भारतीय समाजवाद की ऐतिहासिक यात्रा को दर्शाती है। ये सभी ग्रंथ नेहरू के समाजवादी चिंतन की वैचारिक पृष्ठभूमि, व्यावहारिक प्रयोग और दीर्घकालिक प्रभावों को समग्रता में समझने में सहायक सिद्ध होते हैं।

शोध का उद्देश एवं परिकल्पना :

इस शोध आलेख का प्रमुख उद्देश्य पंडित जवाहरलाल नेहरू के समाजवादी चिंतन का विश्लेषण करना है, जिसमें उनके राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक विचारों के माध्यम से भारतीय समाज में समाजवाद की अवधारणा के विकास को समझा जा सके। शोध का लक्ष्य नेहरू के समाजवाद को भारतीय संदर्भ में परखते हुए यह जानना है कि किस प्रकार उन्होंने पश्चिमी समाजवादी विचारों को भारतीय परिस्थितियों और आवश्यकताओं के अनुरूप ढाला। विशेष ध्यान इस बात पर दिया

जाएगा कि उन्होंने लोकतंत्र और समाजवाद के समन्वय को किस रूप में प्रस्तुत किया और स्वतंत्र भारत के नवनिर्माण में इसकी क्या भूमिका रही।

यह परिकल्पित किया गया है कि जवाहरलाल नेहरू का समाजवादी चिंतन भारतीय समाज की बहुस्तरीय विषमताओं को संबोधित करने का एक वैचारिक प्रयास था, जो पश्चिमी समाजवाद से प्रेरित तो था, परंतु उसकी व्यावहारिकता भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों में आधारित थी। उनका समाजवाद राज्य-नियंत्रित योजना, समानता, धर्मनिरपेक्षता और लोकतांत्रिक मूल्यों पर आधारित था।

कार्य प्रणाली एवं डेटाबेस :

इस शोध आलेख की कार्य प्रणाली ऐतिहासिक, वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक पद्धतियों पर आधारित है। सर्वप्रथम, नेहरू के मौलिक ग्रंथों जैसे *डिस्कवरी ऑफ इंडिया*, *Toward Freedom* तथा उनकी अन्य भाषण-पुस्तकों का आलोचनात्मक अध्ययन किया गया है। इसके साथ ही उनके द्वारा अपनाई गई नीतियों जैसे पंचवर्षीय योजनाएँ, औद्योगिक विकास की रणनीतियाँ एवं मिश्रित अर्थव्यवस्था की अवधारणा का मूल्यांकन किया गया है।

डेटाबेस के रूप में प्राथमिक स्रोतों में नेहरू के लेख, पत्र, संसदीय भाषण तथा योजना आयोग की रिपोर्टें शामिल है। द्वितीयक स्रोतों में जीवनी, राजनीतिक विश्लेषण, समाजवादी विचारधारा पर आधारित पुस्तकों, शोध-पत्रों और आलोचनात्मक लेखों का प्रयोग किया गया है। इसके अतिरिक्त ऑक्सफोर्ड, एनसीईआरटी, और आईसीएसएसआर से प्रकाशित शोध सामग्रियों को भी संकलित कर तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना:

बीसवीं शताब्दी के भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के राजनीतिक और वैचारिक परिदृश्य में पं. जवाहरलाल नेहरू का नाम एक प्रमुख समाजवादी चिंतक और राष्ट्रनिर्माता के रूप में उल्लेखनीय है। उन्होंने जहाँ एक ओर भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई, वहीं दूसरी ओर स्वतंत्र भारत के आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक स्वरूप को आकार देने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। नेहरू का समाजवादी चिंतन एक ऐसे युग में विकसित हुआ जब विश्व दो ध्रुवों–पूंजीवाद और साम्यवाद–के बीच बँटा हुआ था। ऐसे समय में नेहरू ने भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप एक विशिष्ट समाजवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया, जो लोकतंत्र, समानता, वैज्ञानिक सोच और आधुनिकता से ओत-प्रोत था। नेहरू के समाजवादी विचारों की जड़ें उनकी यूरोप यात्रा, सोवियत संघ के दौरे, और मार्क्सवादी साहित्य के अध्ययन में दिखाई देती हैं। परंतु उन्होंने अंधानुकरण न करते हुए समाजवाद को भारतीय समाज के अनुसार ढाला। उनके

समाजवादी विचार किसी भी प्रकार की क्रांतिकारी हिंसा या वर्ग संघर्ष को नहीं, बल्कि वर्ग समन्वय, शांतिपूर्ण परिवर्तन और संवैधानिक व्यवस्था के भीतर सुधार की वकालत करते थे। वे मानते थे कि सामाजिक न्याय, आर्थिक समानता और राज्य की कल्याणकारी भूमिका के माध्यम से ही एक सशक्त और समतामूलक समाज की स्थापना की जा सकती है। स्वतंत्र भारत के पहले प्रधानमंत्री के रूप में नेहरू ने पंचवर्षीय योजनाओं, सार्वजनिक क्षेत्र के विकास, औद्योगीकरण और विज्ञान-प्रौद्योगिकी के प्रोत्साहन द्वारा अपने समाजवादी विचारों को व्यवहार में उतारने का प्रयास किया। उन्होंने मिश्रित अर्थव्यवस्था को अपनाया, जिससे निजी और सार्वजनिक क्षेत्र दोनों को विकास का अवसर मिला। इसके साथ ही उन्होंने लोकतांत्रिक मूल्यों, धर्मनिरपेक्षता और समाजिक न्याय को संविधान और नीति निर्माण का आधार बनाया।

यह आलेख नेहरू के समाजवादी चिंतन की मूल प्रवृत्तियों, व्यवहारिक प्रयोगों, सीमाओं और आलोचनाओं का विश्लेषण करता है। उद्देश्य यह समझना है कि कैसे नेहरू ने भारतीय समाज के पुनर्निर्माण में समाजवाद को एक मार्गदर्शक विचारधारा के रूप में प्रयोग किया। साथ ही यह भी विश्लेषण किया गया है कि उनका समाजवादी मॉडल आज के संदर्भ में कितना प्रासंगिक और प्रेरणादायक है।

समाजवाद का आशय

समाजवाद एक ऐसी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विचारधारा है जो समाज में समानता, न्याय और सामूहिक हित को प्राथमिकता देती है। इसका मूल उद्देश्य पूंजीवादी व्यवस्था द्वारा उत्पन्न आर्थिक असमानता, शोषण और वर्गभेद को समाप्त कर एक समतामूलक समाज की स्थापना करना है। समाजवाद में संसाधनों और उत्पादन के साधनों का स्वामित्व व्यक्तिगत न होकर समाज या राज्य के हाथों में होता है ताकि इनका उपयोग सार्वजनिक भलाई के लिए किया जा सके।[1] समाजवाद का मूल विचार यह है कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति को जीवन की आवश्यक मूलभूत सुविधाएँ–जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, और आवास–प्राप्त होनी चाहिए, और यह जिम्मेदारी राज्य की होनी चाहिए। इसमें लाभ के स्थान पर सेवा की भावना को महत्व दिया जाता है। समाजवाद केवल आर्थिक संरचना तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और राजनीतिक न्याय के सिद्धांतों को भी समाहित करता है। यह व्यक्तिवाद के स्थान पर सहयोग, सहभागिता और सामाजिक उत्तरदायित्व को प्रोत्साहित करता है।[2] विभिन्न देशों और विचारकों द्वारा समाजवाद के भिन्न-भिन्न रूप विकसित किए गए हैं–जैसे लोकतांत्रिक समाजवाद, मार्क्सवादी समाजवाद, उग्र समाजवाद आदि। भारत में समाजवाद का विशेष रूप से लोकतांत्रिक रूप प्रचलित रहा है, जहाँ समाजवाद को संवैधानिक ढांचे और लोकतांत्रिक संस्थाओं के अंतर्गत लागू करने की कोशिश की गई है।

नेहरू का वैचारिक विकास और समाजवाद की ओर झुकाव

जवाहरलाल नेहरू का वैचारिक विकास एक जटिल और बहुआयामी प्रक्रिया थी, जिसमें उनके पारिवारिक परिवेश, शिक्षा, राजनीतिक अनुभव और वैश्विक घटनाओं का गहरा प्रभाव रहा। उनका

समाजवाद की ओर झुकाव कोई आकस्मिक निर्णय नहीं था, बल्कि यह उनके चिंतन, अनुभव और अध्ययन की उपज थी। नेहरू ने भारतीय समाज की गहराई से पड़ताल की और उसे आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक असमानताओं से ग्रस्त पाया। इन विषमताओं के समाधान के लिए उन्होंने समाजवाद को एक प्रभावी साधन के रूप में स्वीकार किया।[3] नेहरू का जन्म 1889 में एक समृद्ध और शिक्षित परिवार में हुआ था। उनके पिता मोतीलाल नेहरू स्वयं एक प्रगतिशील विचारक और कांग्रेसी नेता थे। प्रारंभिक शिक्षा भारत में प्राप्त करने के बाद नेहरू को उच्च शिक्षा के लिए इंग्लैंड भेजा गया। हैरो और ईटन जैसे प्रतिष्ठित विद्यालयों तथा बाद में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में अध्ययन के दौरान उन्होंने यूरोप की राजनीतिक गतिविधियों, दर्शन और विचारधाराओं का गहन अध्ययन किया। विशेषकर मार्क्सवाद, समाजवाद और रूसी क्रांति ने उन्हें अत्यंत प्रभावित किया। रूस की क्रांति को उन्होंने एक ऐतिहासिक परिवर्तन के रूप में देखा जिसने पूंजीवादी शोषण के विरुद्ध एक वैकल्पिक व्यवस्था प्रस्तुत की। हालाँकि नेहरू ने मार्क्सवादी विचारों को गंभीरता से पढ़ा, परंतु वे किसी एक वाद के अंधभक्त नहीं बने। उन्होंने वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ समाजवाद की व्याख्या की और उसे भारतीय संदर्भ में ढालने की चेष्टा की।[4] उनके लिए समाजवाद केवल आर्थिक परिवर्तन का साधन नहीं था, बल्कि यह सामाजिक न्याय, समानता और मानवीय गरिमा की पुनर्प्रतिष्ठा का माध्यम था।1927 में उनकी सोवियत संघ की यात्रा उनके विचारों के विकास में निर्णायक साबित हुई। वहाँ उन्होंने राज्य की भूमिका को समाज के पुनर्निर्माण में सक्रिय रूप से कार्य करते देखा। इससे उनका विश्वास पुख्ता हुआ कि भारत जैसे विविध और निर्धन देश में राज्य को एक सक्रिय नियोजक और संसाधनों के पुनर्वितरणकर्ता की भूमिका निभानी चाहिए। 1930 के दशक में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के भीतर समाजवादी रुझान तेज़ हुए। नेहरू इसके अग्रणी चेहरों में से एक बने। 1936 के लखनऊ अधिवेशन में उन्होंने कांग्रेस को औपचारिक रूप से समाजवाद की दिशा में अग्रसर होने का आह्वान किया। यहीं से कांग्रेस के भीतर 'कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी' जैसी इकाइयाँ भी सक्रिय हुईं, जिन्होंने नेहरू के विचारों को और मजबूती दी।[5] नेहरू का समाजवाद, लोकतंत्र के साथ गहराई से जुड़ा हुआ था। वे यह मानते थे कि भारत जैसे बहुलतावादी देश में तानाशाही या क्रांति के माध्यम से समाजवाद थोपना व्यावहारिक नहीं है। उन्होंने लोकतांत्रिक मूल्यों और संस्थाओं के भीतर रहते हुए आर्थिक और सामाजिक न्याय के लक्ष्य को प्राप्त करने की बात की।

इस प्रकार नेहरू का वैचारिक विकास एक क्रमिक प्रक्रिया थी, जिसमें अध्ययन, अनुभव और समाज के यथार्थ के साथ उनका संवाद प्रमुख कारक थे। उन्होंने पश्चिमी समाजवाद की मूल अवधारणाओं को भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप पुनर्गठित किया और एक व्यवहारिक, लोकतांत्रिक समाजवाद की आधारशिला रखी।

भारतीय संदर्भ में नेहरू का समाजवाद

जवाहरलाल नेहरू का समाजवादी दृष्टिकोण भारतीय समाज की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आर्थिक परिस्थितियों की गहरी समझ पर आधारित था। यद्यपि उन्होंने समाजवाद की प्रेरणा यूरोपीय

विचारकों और विशेषतः मार्क्सवादी दर्शन से प्राप्त की, किंतु उन्होंने उसका जड़ रूप से अनुकरण नहीं किया। उनका समाजवाद न तो केवल वर्ग संघर्ष पर आधारित था, न ही यह तानाशाही की ओर झुकता था।[6] उन्होंने भारतीय संदर्भ में समाजवाद का मानवीय, लोकतांत्रिक और समावेशी रूप प्रस्तुत किया। भारत एक विविधतापूर्ण समाज है जिसमें जाति, वर्ग, धर्म, भाषा और क्षेत्र के स्तर पर गहरी विषमताएँ व्याप्त हैं। ब्रिटिश उपनिवेशवाद ने इस विषमता को और गहरा किया था। आर्थिक दृष्टि से भारत एक कृषि-प्रधान और निर्धन देश था जहाँ बहुसंख्यक जनता गरीबी, बेरोजगारी और अशिक्षा की चपेट में थी। नेहरू ने इन समस्याओं की जड़ पूंजीवादी और सामंती संरचनाओं में देखी और समाजवाद को इनका समाधान माना। उन्होंने यह स्पष्ट रूप से कहा कि स्वतंत्र भारत की प्राथमिक आवश्यकता आर्थिक समानता और सामाजिक न्याय है। नेहरू का समाजवाद राज्य की सक्रिय भूमिका पर आधारित था। वे मानते थे कि स्वतंत्र बाजार व्यवस्था भारत जैसे देश में सामाजिक न्याय की स्थापना नहीं कर सकती।[7] उन्होंने एक ऐसे 'कल्याणकारी राज्य' की परिकल्पना की जो योजनाबद्ध विकास के माध्यम से संसाधनों का समान वितरण करे। इसी उद्देश्य से उन्होंने 1950 में योजना आयोग की स्थापना की और पंचवर्षीय योजनाओं की शुरुआत की। इन योजनाओं का मूल उद्देश्य था–गरीबी का उन्मूलन, औद्योगिक विकास, शिक्षा और स्वास्थ्य का प्रसार तथा ग्रामीण पुनर्निर्माण। नेहरू के समाजवाद का एक प्रमुख पक्ष था सार्वजनिक क्षेत्र का निर्माण। उन्होंने 'मिश्रित अर्थव्यवस्था' की नीति अपनाई जिसमें सार्वजनिक और निजी क्षेत्र दोनों को भूमिका दी गई, किंतु प्राथमिकता सार्वजनिक क्षेत्र को दी गई। उन्होंने भारी उद्योगों, इस्पात संयंत्रों, पनबिजली परियोजनाओं और वैज्ञानिक संस्थानों की स्थापना को प्राथमिकता दी। उनका मानना था कि ऐसे बुनियादी ढाँचे देश की आत्मनिर्भरता और सामाजिक विकास के आधार बनेंगे। धर्मनिरपेक्षता और लोकतंत्र, नेहरू के समाजवादी दर्शन के दो प्रमुख स्तंभ थे। उन्होंने यह स्पष्ट रूप से कहा कि भारत का समाजवाद धर्म आधारित भेदभाव को समाप्त करके ही सफल हो सकता है। इसलिए उन्होंने धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र की नींव रखी और अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा की।[8] साथ ही, उन्होंने समाजवाद को लोकतंत्र के साथ जोड़कर देखा। उनके अनुसार, लोकतांत्रिक ढांचे के भीतर रहकर ही समाजवाद को स्थायी और न्यायसंगत बनाया जा सकता है। नेहरू का समाजवाद केवल आर्थिक नीतियों तक सीमित नहीं था, बल्कि इसमें शिक्षा, विज्ञान, महिला सशक्तिकरण और सामाजिक सुधार जैसे तत्व भी शामिल थे। उन्होंने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का उपकरण माना और प्राथमिक शिक्षा के प्रसार के लिए कई प्रयास किए। साथ ही, उन्होंने वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने के लिए संस्थानों की स्थापना की।

इस प्रकार, भारतीय संदर्भ में नेहरू का समाजवाद एक समग्र दृष्टिकोण था जो केवल आर्थिक समानता नहीं, बल्कि सामाजिक समरसता, लोकतांत्रिक मूल्यों और आधुनिक राष्ट्र-निर्माण के विचार पर आधारित था। यद्यपि इसे पूरी तरह लागू करने में अनेक बाधाएँ आईं, फिर भी यह भारत के विकास पथ का दिशा-निर्देशक बना रहा। नेहरू ने समाजवाद को भारत की आत्मा और उसकी विकास यात्रा का आधार बनाया।

औद्योगिक समाजवाद की धारणा एवं नेहरू

औद्योगिक समाजवाद की धारणा उस समाजवादी विचारधारा का रूप है जिसमें औद्योगीकरण को समाजवादी विकास का प्रमुख आधार माना जाता है। इस सिद्धांत के अनुसार, समाज में समता, सामाजिक न्याय और आर्थिक विकास की प्राप्ति औद्योगिक संरचनाओं के विकास से ही संभव है, बशर्ते कि इनका स्वामित्व और नियंत्रण समाज या राज्य के पास हो। औद्योगिक समाजवाद, विशेष रूप से विकासशील देशों में, गरीबी हटाने, बेरोजगारी कम करने, और आर्थिक आत्मनिर्भरता प्राप्त करने का साधन माना गया है। भारत के संदर्भ में, इस धारणा को सबसे स्पष्ट रूप से जवाहरलाल नेहरू की नीतियों और योजनाओं में देखा जा सकता है। नेहरू का मानना था कि भारत जैसे विशाल और निर्धन देश के विकास के लिए केवल कृषि पर निर्भर रहना व्यावहारिक नहीं है। कृषि का आधुनिकीकरण आवश्यक था, लेकिन उसके साथ-साथ उद्योगों की स्थापना भी उतनी ही जरूरी थी। उनके अनुसार, भारी उद्योगों का विकास न केवल आर्थिक संरचना को मजबूत करता है, बल्कि यह बेरोजगारी को दूर करने, राष्ट्रीय उत्पादन बढ़ाने और तकनीकी उन्नति को बढ़ावा देने का भी माध्यम बनता है। इसलिए उन्होंने भारत में एक ऐसे समाजवादी मॉडल की कल्पना की जिसमें राज्य-नियंत्रित औद्योगिकीकरण केंद्रीय भूमिका निभाए।[9] नेहरू ने औद्योगिक समाजवाद की दिशा में ठोस कदम उठाने के लिए **पंचवर्षीय योजनाओं** की शुरुआत की। प्रथम पंचवर्षीय योजना (1951-56) में जहाँ कृषि और सिंचाई पर जोर था, वहीं द्वितीय पंचवर्षीय योजना (1956-61) में भारी उद्योगों को प्राथमिकता दी गई। यह योजना सोवियत संघ की योजना प्रणाली से प्रेरित थी और इसमें औद्योगीकरण को सामाजिक परिवर्तन का मुख्य उपकरण माना गया। स्टील प्लांट्स, मशीन टूल्स फैक्ट्रियाँ, पावर प्रोजेक्ट्स, और इंजीनियरिंग उद्योग जैसी परियोजनाओं की नींव इसी दौर में रखी गई। नेहरू ने सार्वजनिक क्षेत्र को औद्योगिक विकास का प्रमुख वाहक बनाया। उन्होंने निजी पूंजीवाद के स्थान पर राज्य की प्रमुख भूमिका की वकालत की, ताकि आर्थिक संसाधनों का न्यायसंगत वितरण हो सके। उनके अनुसार, सार्वजनिक क्षेत्र में स्थापित उद्योग न केवल आर्थिक उत्पादन को बढ़ाएँगे, बल्कि वे सामाजिक उद्देश्य, जैसे–गरीबी हटाना, रोजगार सृजन, और क्षेत्रीय असमानताओं को कम करना–भी पूरा करेंगे। औद्योगिक समाजवाद की यह धारणा केवल आर्थिक दृष्टिकोण तक सीमित नहीं थी। नेहरू ने इसे सामाजिक न्याय और आधुनिकता से भी जोड़ा।[10] उनका मानना था कि औद्योगिक विकास से जातिवाद, अंधविश्वास, और रूढ़िवादी सोच को भी चुनौती मिलेगी। उन्होंने वैज्ञानिक सोच और तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए आईआईटी, इसरो, सीएसआईआर जैसे संस्थानों की स्थापना की, जिससे भारत एक आधुनिक और आत्मनिर्भर राष्ट्र बन सके।

हालाँकि, नेहरू की औद्योगिक समाजवादी नीति की आलोचना भी हुई। कई विद्वानों का मानना है कि भारी उद्योगों पर अत्यधिक बल देने से कृषि और लघु उद्योगों की उपेक्षा हुई। इसके अलावा, सार्वजनिक क्षेत्र में भ्रष्टाचार, नौकरशाही और दक्षता की कमी जैसी समस्याएँ भी सामने आईं। फिर भी, इन आलोचनाओं के बावजूद, यह स्वीकार करना होगा कि नेहरू का औद्योगिक समाजवाद भारत के आर्थिक विकास और औद्योगिक आधारभूत संरचना के निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास था।

नेहरू के समाजवादी मॉडल की आलोचना एवं सीमाएं

जवाहरलाल नेहरू का समाजवादी मॉडल स्वतंत्र भारत के आर्थिक एवं सामाजिक विकास की दिशा में एक महत्वाकांक्षी प्रयास था। उन्होंने राज्य के नेतृत्व में योजनाबद्ध विकास, सार्वजनिक क्षेत्र की प्रधानता और संसाधनों के समान वितरण को केंद्र में रखकर समाजवाद की स्थापना का प्रयास किया। हालाँकि यह मॉडल भारत की आधारभूत संरचना को खड़ा करने में सहायक सिद्ध हुआ, लेकिन समय के साथ इसकी अनेक **सीमाएँ** और **आलोचनाएँ** भी सामने आईं।

1. सार्वजनिक क्षेत्र की अक्षमता

नेहरू के समाजवादी मॉडल में सार्वजनिक क्षेत्र को आर्थिक विकास का मुख्य इंजन माना गया था। किंतु व्यवहार में ये उपक्रम धीरे-धीरे अक्षम, भ्रष्ट और अनुत्पादक बनते चले गए। निर्णय-निर्माण की प्रक्रिया में नौकरशाही का वर्चस्व बढ़ा और दक्षता की भारी कमी दिखाई दी। घाटे में चलने वाले सार्वजनिक उपक्रमों पर सरकार को लगातार भारी सब्सिडी देनी पड़ी, जिससे अर्थव्यवस्था पर भार बढ़ा।

2. निजी क्षेत्र की उपेक्षा

हालाँकि नेहरू ने मिश्रित अर्थव्यवस्था की अवधारणा अपनाई थी, परंतु उनके मॉडल में निजी क्षेत्र को संदेह की दृष्टि से देखा गया। अत्यधिक लाइसेंस, नियंत्रण और अनुमति की प्रणाली (जिसे "लाइसेंस राज" कहा गया) ने उद्यमिता की भावना को दबा दिया और आर्थिक विकास की गति को धीमा कर दिया।

3. कृषि क्षेत्र की उपेक्षा

नेहरू के औद्योगिक समाजवाद में भारी उद्योगों और सार्वजनिक उपक्रमों पर अधिक बल दिया गया, जिससे कृषि और ग्रामीण विकास की उपेक्षा हुई। भारत की अधिकांश जनसंख्या उस समय कृषि पर निर्भर थी, लेकिन संसाधनों का एक बड़ा हिस्सा औद्योगिक विकास में लगा दिया गया। इससे ग्रामीण-शहरी विषमता बढ़ी और किसान वर्ग को अपेक्षित लाभ नहीं मिल सका।

4. गरीबी और असमानता में कमी न आना

नेहरू का समाजवाद सामाजिक न्याय और आर्थिक समानता की स्थापना का लक्ष्य रखता था, लेकिन व्यावहारिक स्तर पर गरीबी, बेरोजगारी और सामाजिक विषमता जैसी समस्याओं में अपेक्षित सुधार नहीं हो सका। सामाजिक योजनाओं के लाभ बहुधा प्रभावशाली वर्गों तक सीमित रह गए।

5. अत्यधिक केंद्रीयकरण

नेहरू के मॉडल में योजना आयोग और केंद्र सरकार को अत्यधिक शक्तियाँ दी गईं। इससे राज्यों की भूमिका सीमित हो गई और भारतीय संघीय ढांचे में असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हुई। आर्थिक निर्णयों में स्थानीय आवश्यकताओं और विविधताओं की उपेक्षा हुई।

6. लोकतांत्रिक समाजवाद की व्यवहारिक कठिनाइयाँ

नेहरू ने लोकतंत्र और समाजवाद को जोड़ने का प्रयास किया, लेकिन इन दोनों के बीच कई बार तनाव की स्थिति उत्पन्न हुई। समाजवाद की कुछ नीतियाँ लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं के साथ टकराने लगीं, विशेषकर जब राज्य की भूमिका बहुत बड़ी हो गई।

वस्तुत नेहरू का समाजवादी मॉडल एक आदर्शवादी दृष्टिकोण था, जिसने भारत को औद्योगिक और वैज्ञानिक आधार प्रदान किया, लेकिन व्यवहार में इसकी कई सीमाएँ स्पष्ट हुईं। बदलते समय और वैश्विक परिस्थितियों ने यह स्पष्ट कर दिया कि एक लचीली, प्रतिस्पर्धात्मक और समावेशी आर्थिक नीति ही दीर्घकालिक विकास का आधार बन सकती है। फिर भी, नेहरू की समाजवादी सोच ने भारत की विकास यात्रा की मजबूत नींव रखी, जिसे आज भी कई संदर्भों में याद किया जाता है।

संदर्भ सूची (References):

1. नेहरू, जवाहरलाल। *डिस्कवरी ऑफ इंडिया (भारत एक खोज)*। नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट, 2004। पृ. 357
2. चंद्र, विपिन। *आधुनिक भारत का आर्थिक इतिहास*। नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2012। पृ. 221
3. मित्रा, सुब्रत कुमार। *डेमोक्रेसी एंड सोशलिज्म इन इंडिया*। नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन्स, 2005। पृ. 87
4. प्रकाश, बद्री नारायण। *भारत में समाजवाद और लोकतंत्र*। दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2011। पृ. 145
5. दत्ता, वी.पी. *जवाहरलाल नेहरू: ए पॉलिटिकल बायोग्राफी*। नई दिल्ली: वाइकिंग, 1997। पृ. 202
6. गोपाल, सरदार के. *नेहरू: ए बायोग्राफी* खंड 2। नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1989। पृ. 178
7. घोष, प्रदीप कुमार। *इंडियन सोशलिज्म: नेहरू एंड आफ्टर*। कलकत्ता: मिनर्वा एसोसिएट्स, 1984। पृ. 59
8. रेड्डी, पी.एन. और अप्पन, एच.एच. *इंडियन इकॉनॉमी*। हैदराबाद: के.के. पब्लिकेशन्स, 2010। पृ. 314
9. जोशी, पुरुषोत्तम। *भारत में मिश्रित अर्थव्यवस्था की अवधारणा*। भोपाल: माखनलाल चतुर्वेदी विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2008। पृ. 88
10. सिंह, रघुबीर। *भारतीय समाजवाद का इतिहास*। बनारस: विश्वभारती प्रकाशन, 2001। पृ. 233